ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 04 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 अप्रैल, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 वै.कृ.-05

गुरुकुल धीरणवास में राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

जलियांवाला बाग कांड के 104 वर्ष पूरे होने पर

104 शिक्षकों व सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया

सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा गुरुकुल के संरक्षक स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

14 अप्रैल, 2022 को हिसार जिले में स्थित गुरुकुल धीरणवास के प्रांगण में गुरुकुल धीरणवास, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ व युवा निर्माण अभियान के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शिक्षक गौरव सम्मान समारोह का आयोजन गुरुकुल धीरणवास परिसर में किया गया। जलियावाला बाग कांड के 104 वर्ष पूरे होने पर जलियांवाला बाग के शहीदों की स्मृति में आयोजित सम्मेलन में कुल 104 शिक्षकों व सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया।

गुरुकुल के प्रवक्ता श्री सत्यपाल अग्रवाल ने बताया कि 'राष्टीय शिक्षक गौरव सम्मान' के इस अवसर पर 80 शिक्षकों के अलावा 10 सोशल मीडिया कर्मियों को 'सजग प्रहरी सम्मान' व 14 शिक्षकों को शिक्षा सारथी पुरस्कार' प्रदान किया गया। जिनमें हरियाणा के अतिरिक्त राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, उड़ीसा, चंडीगढ़ के शिक्षक शामिल थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि शिक्षा मनुष्य को शिक्षित बनाती है और शिक्षित मनुष्य ही सही अर्थों में मानव कहलाता है, किन्तु संस्कारविहीन शिक्षा अधूरी है। संस्कारों के बिना मनुष्य का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। अतः शिक्षक गौरव सम्मान समारोह में पधारे हुए देश के महत्त्वपूर्ण शिक्षक बन्धुओं से मैं आग्रह करता हूँ कि वे बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देना प्रारम्भ करें। शिक्षक बच्चे का

गुरु होता है। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि मातृमान, पितृमान, आचार्यरवान पुरुषो वेद। अर्थात् बच्चे का पहला गुरु माँ, दूसरा गुरु पिता और तीसरा गुरु आचार्य (शिक्षक) होता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कारों का कोई स्थान नहीं है, यह शिक्षा प्रणाली बच्चे को केवल अक्षर ज्ञान कराती है और नैतिक तथा मानवीय मूल्यों की शिक्षा से पूरी तरह विहीन है। भारत विश्वगुरु रहा है। अतः उसी पद को प्राप्त करने के लिए शिक्षा में नैतिकता, चरित्र, ईमानदारी, सेवा एवं समर्पण आदि का समावेश अत्यन्त आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने शिक्षा के सम्बन्ध में कहा है कि यह जाति नियम और राज नियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय में जाये। अर्थात् शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि चाहे कोई राजकुमारी हो या राजकुमार, चाहे दरिद्र की सन्तान हो, सबको तुल्य वस्त्र, खान–पान, आसन मिलने चाहिए। जिसका तात्पर्य स्पष्ट है कि शिक्षा निःशुल्क तथा समान भी होनी चाहिए। जब राष्ट्र में शिक्षा अनिवार्य होगी, समान होगी और निःशुल्क होगी तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वयं ही हो जायेगा। आज गरीब, अमीर के बीच में शिक्षा बंटी हुई है। अमीरों के बच्चे मंहगी शिक्षा प्राप्त करते हैं, किन्तु गरीबों के बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं और इसी के परिणामस्वरूप समाज में कहीं आरक्षण तथा कहीं जातिगत और आर्थिक आधार पर शिक्षा और नौकरियों में लाभ लेने की प्रतिस्पर्धा चलती है। इस गम्भीर समस्या का समाधान राजा और रंग के बच्चों को समान शिक्षा देकर किया जा सकता है। स्वामी आर्यवेश जी ने इस महत्त्वपूर्ण आयोजन के लिए जहां सभी शिक्षक महानुभावों को अपनी शुभकामनाएँ तथा बधाई दी वहीं कार्यक्रम के संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी तथा उनकी पूरी टीम को साधुवाद दिया।

कार्यक्रम में हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री रणबीर गंगवा के प्रतिनिधि के रुप में उनके सुपुत्र श्री संजीव गंगवा पहुँचे। उन्होंने गुरुकुल परिवार को धन्यवाद दिया तथा शिक्षकों को बधाई दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ. जगबीर सिंह जी ने इस अवसर पर शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता होते हैं, उनके ऊपर बच्चों के निर्माण का महत्त्वपूर्ण दायित्व है। शिक्षक यदि निष्ठा एवं कर्त्तव्यपरायणता के साथ बच्चों के निर्माण के लिए कार्य करें तो भारत का भविष्य सुरक्षित हो सकता है। उन्होंने बताया कि लॉर्ड मैकाले ने सन् 1835 में लन्दन की संसद में कहा था कि भारत की उन्नति एवं प्रगति के पीछे शिक्षा ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मैकाले ने कहा था कि भारत के 7 लाख गाँवों में 7 लाख गुरुकुल हैं जिनमें गरीब–अमीर सभी के बच्चे पढ़ते हैं और शिक्षा के साथ–साथ संस्कारों के द्वारा देशभक्त बनते हैं। मैकाले ने इस रहस्य का उद्घाटन करके उन गुरुकुलों पर प्रतिबन्ध लगाने का कार्य किया। इसलिए वर्तमान समय में हमें शिक्षा में संस्कारों को भी समावेश करना होगा। डॉ. जगवीर सिंह जी ने शिक्षकों को प्रेरित

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

भ्रष्टाचार मिटाने का सुझाव

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

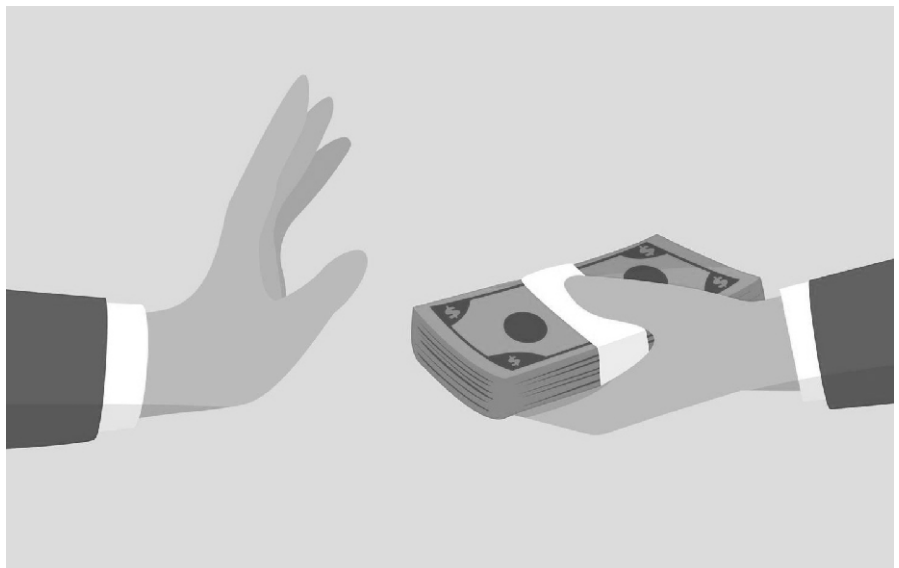

भ्रष्टाचार की समस्या बहुआयामी और संक्रामक है। बहुआयामी कहना न्यूनोक्ति है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार सर्वव्यापक लगता है। इस समय हमारे देश में शायद ही कोई क्षेत्र होगा जिसमें ईमानदारी से काम हो जाता हो। सबसे नीचे के स्तर पर गाँव के लेखपाल से लेकर तहसील तक और तहसील से लेकर जिले के स्तर तक शायद ही कोई काम होगा जो ईमानदारी से, बिना कुछ लिये दिये सम्पन्न हो पाता है। जिले से प्रान्त की राजधानियाँ तथा देश की राजधानी दिल्ली तक सर्वत्र भ्रष्टाचार फैला हुआ है। राजनीतिक पार्टियों में और सरकार में सब जगह संसाधनों के आंकड़े जोड़े–घटाये जाते हैं। चरित्र और ईमानदारी का मूल्य लगभग शून्य हो गया है। चुनाव में किसको टिकट दिया जाये, निर्वाचित होने पर किसे मंत्रिमण्डल में लिया जाये, मंत्रिमण्डल में भी किसको क्या विभाग सौंपा जाये, ये सभी निर्णय संसाधनों के जुटाने के हिसाब से ही तय किये जाते हैं। मंत्रिमण्डल के बाहर भी ऐसे बहुत से पद पोस्ट होते हैं जिनमें बहुत पर्याप्त आर्थिक उपलब्धि होती है। इन सभी नियुक्तियों में योग्यता कम और पार्टी के लिए संसाधन एकत्र करने का अधिक विचार रखा जाता है। जो व्यक्ति पार्टी के लिए जितना अधिक फण्ड ला सकता है, उसका उतना अधिक मूल्य पद पोस्ट की नियुक्तियों में लगाया जाता है।

सरकारी काम–काज में ढिठाई या निर्लज्जता इतनी अधिक बढ़ गई है कि अच्छी–बड़ी संख्या में लगभग एक तिहाई से भी अधिक विधायक और सांसद अपराधिक मामलों से जुड़े हुए हैं। इस समय तो भारत के केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में एक घोटाले के बाद दूसरा घोटाला और दूसरे घोटाले के बाद तीसरा घोटाला, घोटालों की शृंखला बनती जा रही है और सरकार है कि अपनी विश्वसनीयता का प्रबन्ध जैसे–तैसे किये जा रही है और सरकार को बचाये जा रही है।

यह केवल सरकार और चुनाव की ही बात नहीं है बल्कि आज किसी भी क्षेत्र में बिना परोक्ष की व्यवस्था के कोई काम नहीं हो पा रहा है। चपरासी से लेकर बाबूगिरी, अध्यापिकी या कोई अन्य नियुक्ति बिना परोक्ष प्रबन्धन के शायद ही कहीं हो पा रही होगी।

भ्रष्टाचार केवल सरकारी काम–काज या राजनीति में ही नहीं है। सामाजिक स्तर पर शुद्ध सामान, बिना मिलावट के कोई वस्तु, अच्छी, शुद्ध, सही दवाइयों का भी मिलना दुर्लभ हो गया है। थोक बाजार हो या खुदरा बाजार हो, शुद्ध वस्तुओं का मिलना कठिन हो गया है।

राजनीति और बाजार की बात तो अपनी जगह पर है। इन क्षेत्रों में भ्रष्टाचार और बेईमानी के आर्थिक आकर्षण हैं। इस समय सामाजिक स्तर पर इतना भ्रष्टाचार, इतना दुराचार, इतना कुत्सित कदाचार है जैसा पहले सुनने को नहीं मिलता था। बलात्कार, व्यभिचार, यौन–उत्पीड़न, आत्महत्या, और भ्रूण हत्या जैसे अपराधों से समाचार पत्र भरे हुए हैं। इधर सरकार है कि एक्साइज डयूटी कमाने के लिए शराब, नाइट क्लब, रात की रंगीनियाँ और भी अन्य प्रकार के दुराचार के उत्तेजक विज्ञापनों को बहुत सुलभ किये गया हैं। एक प्रकार से देखें तो इस समय भ्रष्टाचार अपने विभिन्न रूपों में देश के सभी क्षेत्रों में व्याप्त हो गया है। इस तरह इतने व्यापक पैमाने पर भ्रष्टाचार मिटाने का उपाय खोजना सभी विचारशीलों का आवश्यक नैतिक दायित्व बनता है।

भ्रष्टाचार का कारण – भ्रष्टाचार बौद्धिक तथा आध्यात्मिक मानसिक विकार का फल है। यह चरित्रगत विकार से उत्पन्न होता है। अतः भ्रष्टाचार का समाधान मन को शुद्ध करने और चरित्र को सुधारने से है। यह केवल थाना–पुलिस, न्यायालय के क्षेत्र से अलग भी 'समाधान की अपेक्षा रखता है। भ्रष्टाचार का समूल, समग्र, उन्मूलन तो आज के समय में असम्भव सा ही लगता है किन्तु इसे पर्याप्त सीमा तक कम करने का उपाय सम्भव है। भ्रष्टाचार कम करने, मिटाने के दो प्रकार के कार्यक्रम समझ में आते हैं – (1) विधेयात्मक उपाय और (2) नियन्त्रात्मक उपाय।

(1) विधेयात्मक उपाय – विधेयात्मक उपाय आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा और समाज की चिन्तनधारा से सम्बन्धित है। आज की हमारी शिक्षा सर्वथा एकांगी हो गई है। इस समय शिक्षा में बुद्धि की तीव्रता, विज्ञान और तकनीकी (टेक्नालॉजी) पर जोर दिया जा रहा है। नैतिकता, आदर्श, मानवता, सत्य, कर्त्तव्य, सामाजिक दायित्व आदि पर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। इस समय शिक्षा मंत्रालय को मानव संसाधन प्रबन्धन का रूप दे दिया गया है। समाज में शान्ति, सुव्यवस्था, सदाचार इत्यादि शिक्षा के साध्य थे। इस समय शिक्षा का उद्देश्य मानव संसाधन के द्वारा आर्थिक विकास मात्र रह गया है। पहले विद्यालयों की पुस्तकों में आदर्श, सच्चरित्रता, ईमानदारी आदि के पाठ पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित होते थे। श्रवण कुमार, सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथाएँ तो बहुत दूर चली गई। आज तो ''पंच परमेश्वर'' और 'नमक का दरोगा'' जैसी चरित्र को बल देने वाली कहानियाँ भी नहीं पढ़ाई जा रही हैं। इस समय विज्ञान, परमाणु, टेक्नोलॉजी आदि पर अधिक जोर है। हमारा आशय यह है कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी बहुत आवश्यक है और उन्हें अवश्य ही पढ़ाना चाहिए किन्तु चरित्र को सुधारने वाले तंत्रों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। सामाजिक माहौल को भी सत्याचार मूलक बनाना आवश्यक है।

इधर अभी हाल में मानव संसाधन मंत्रालय के नये मन्त्री जी श्री एम. एम. पल्लम राजू ने यह घोषणा की है कि शिक्षा में नैतिकता को स्थान देने की बहुत अधिक आवश्यकता है। हम मानव संसाधन मंत्री जी को धन्यवाद तो दे सकते हैं कि उन्हें नैतिकता का ध्यान आया। किन्तु केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारों की अन्य नीतियों को देखते हुए यह कठिन लगता है कि नैतिक शिक्षा को उसका उचित स्थान मिल पायेगा। केन्द्रीय सरकार और अनेक प्रान्तीय सरकारें राजस्व की वसूली बढ़ाने के लिए शराब, जुआ, नाइट क्लब, होटलों में रंगीनियों को प्रोत्साहन देने पर तुली हुई हैं। भारत आज भी लगभग 80 प्रतिश गाँव में बसता है। आज गाँव में भी संचार माध्यम के बदौलत टी. वी. इण्टरनेट आदि की पहुँच के कारण शराब और दुराचार, कदाचार बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। सरकार मतदाताओं को लुभाने के लिए राहत की व्यवस्था कर रही है। बेकारी भत्ता, विधवाओं को भत्ता राहत दी जा रही है। ग्रामीण रोजगार योजना में काम की नहीं, रुपया लूटने की होड़ लगी हुई है। कई प्रान्तों में इस लूट के हिसाब के लिए सी. बी. आई. की जाँच की माँग हो रही है। किन्तु सरकार वोट के लिए रुपये बाँट रही है। राहत और सहायता आपत्ति काल में अल्पकालिक उचित हो सकती है। किन्तु नागरिकों में परिश्रम शीलता, अपनी मेहनत पर निर्भरता का चरित्र पैदा करना चाहिए। लोग परिश्रम करें और रुपया पावें। नागरिकों में अकर्मण्यता को प्रोत्साहन देना राष्ट्रीय अपराध है।

मातृभूमि या राष्ट्र को धारण करने वाले स्तम्भ, तत्वों का एक परिगणन अथर्ववेद के भूमिसूक्त में मिलता है। वह परिगणन भी राष्ट्र निर्माण और भ्रष्टाचार के उन्मूलक की दृष्टि से बहुत उपयोगी है –

''सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवींधारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पल्युर लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।'' अथर्ववेद 12–1–1

राष्ट्र को धारण करने वाले ये तत्व हैं – (1) सत्यम्–शासक और जनता दोनों ही मन, वचन, कर्म से सत्य का पालन करें। (2) बृहत्–महान्, उद्यम, उद्योग। (3) ऋतम्–उचित। (4) उग्रम्–तेजस्विता, बुद्धि, शक्ति, सेना आदि। (5) दीक्षा–उद्देश्य के लिए समर्पण। (6) तपः–स्वकर्त्तव्य में परिश्रम। (7) ब्रह्म–महान। (8) यज्ञः–निःस्वार्थ, समन्वय, सामंजस्य, पूज्यों का सम्मान इत्यादि। ये आठ तत्व राष्ट्र को स्तम्भ की तरह धारण करते हैं। ऐसा राष्ट्र अपने अतीत, वर्तमान और भविष्यत् को महान बनाता है।

इस समय भी हमें उचित है कि हम अपनी शिक्षा को, पाठ्यक्रम को एकांगी न रहने दें और विज्ञान बुद्वि, टेक्नोलॉजी के साथ कर्त्तव्य, आदर्श, ईमानदारी और चरित्र की भी शिक्षा दें।

नियन्त्रात्मक उपाय – राष्ट्र में कुछ ऐसे नीच प्रकृति के दुष्ट लोग होते हैं जिन पर आदर्श, चरित्र, ईमानदारी सम्बन्धी शिक्षाओं का प्रभाव नहीं पड़ता। उन पर केवल डण्डे का दण्ड का, भय ही कुछ काम कर सकता है। ऐसे लोगों के लिए थाना–पुलिस, न्यायालय, सतर्कता आयोग, लोकायुक्त, लोकपाल आदि की व्यवस्था बनाई जाती है। आज तो हमारे देश में यह नियन्त्रात्मक व्यवस्था भी लंगड़ी लूली हो चली है। शासनतन्त्र इस नियन्त्रण को भी आधे–अधूरे मन से लगाना चाहता है। नियन्त्रण करे भी तो कौन जब शासनतन्त्र स्वयं भ्रष्टाचार में डूबा हुआ हो। आज तो किसी भी शासन के अधिकारी को शायद ही कानून से डर लगता हो। मनु महाराज ने लिखा है – ''दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः दण्ड एवाभि रक्षति।'' दण्ड का सब पर शासन है और दण्ड रक्षा करता है।

आज तो शासन को भी सोचना पड़ेगा है कि उनका दण्ड विधान कितना कारगर है?

ईशावास्यम् पी.–30, कालिन्दी,
कोलकाता–700089
मो.:–9432301602, 033–25222636

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आयोजित होने वाले शिविरों की तैयारी शुरू
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

एक सौ आर्य युवा निर्माण शिविरों का होगा आयोजन

आर्य युवा निर्माण एवं ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेने के इच्छुक युवाओं से निवेदन है कि ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में आप शिविर में भाग लेने की तैयारी अभी से प्रारम्भ कर दें। इन शिविरों में युवाओं को प्रशिक्षण देने वाले व्यायाम शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए 22 से 28 मई, 2022 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में व्यायाम शिक्षक शिविर का आयोजन होगा। इसमें योग्य व्यायामाचार्य व्यायाम शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। 29 मई, 2022 से जगह–जगह शिविरों का आयोजन प्रारम्भ होगा। जिसमें इन सभी व्यायाम शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए भेजा जायेगा। अपने शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए सभी युवक अभी से अपना पंजीकरण करवा लें, ताकि बाद में स्थान पूर्ण होने के पश्चात् आप शिविर से वंचित न रह जायें। शिविरों के सम्बन्ध में निम्नलिखित दूरभाष पर सम्पर्क करें।

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
केन्द्रीय कार्यालय : 7, जन्तर, मन्तर रोड, नई दिल्ली–110001
सम्पर्क सूत्र – 9468165946, 9354840454, 9416630916

वेद का आदेश

- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

यह सिद्धान्त सर्वविदित है कि संसार में वेद सबसे पुराने ग्रन्थ हैं और वैदिक धर्मी वेदों का प्रादुर्भाव आदि सृष्टि में मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ ही मानते हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों के उपयोग के लिए जहाँ नाना प्रकार की वस्तुएँ रचीं वहाँ उन वस्तुओं का उचित उपयोग और व्यवहार बताने के लिए ऋषियों के हृदय में ज्ञान भी प्रेरित किया और उन ऋषियों का संसार में रहन-सहन और पदार्थ के उपयोग और व्यवहार का निर्देश इसी ईश्वर प्रेरित ज्ञान वेद के आधार पर किया।

जिस समय ऋषियों ने वेदों का सन्देश और आदेश मनुष्यों को सुनाया उस समय सब मनुष्य एक ही स्थान पर रहते थे। देश विदेश और अनेक जातियों में मनुष्य बंटे नहीं थे। भाषा भी उस समय सब की एक ही थी और वह भाषा है वेदों की भाषा।

आदि सृष्टि में भगवान ने मनुष्य को कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ मन और बुद्धि प्रदान की तो मनुष्य को स्वभावाभिव्यक्ति करने के लिए भाषा ईश्वर ने ही मनुष्य को प्रदान की। वेद का अभिमत है :-

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयंदधानाः।

(ऋग्वेद 10/71/1)

महान संसार के पालक प्रभु ने प्रथम नाम धारण करने वाली वाणियाँ प्रेरित की।

अब मनुष्य के लिए वेदों का आदेश क्या है यह सुनिए -

प्रत्येक मनुष्य सहृदय बने। सहृदय उसे कहते हैं कि अन्य के कष्टों को अनुभव करें। किसी भी प्राणी को कष्ट में देखकर मनुष्य के हृदय में दर्द उत्पन्न हो।

सामंजस्य का आशय है कि सबके मनों में सामंजस्य हो। सबके अधिकारों की रक्षा हो। सबके मनों में संतोष हो सके ऐसी बात होनी चाहिए। एक दो व्यक्तियों के ही मन की न होना चाहिए। परस्पर द्वेष नहीं होना चाहिए। एक दूसरे के वैभव विकास को देखकर कुढ़े नहीं। और एक-दूसरे को इस प्रकार प्रेम करें जैसा गौ अपने सद्यजात वत्स का करती है।

1. सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।

(अथर्ववेद 3/30/1)

उपर्युक्त मंत्र में जो सामाजिक शिक्षा दी गई है वह कुटुम्ब पर नगर पर और देश पर लागू होती है। मनुष्य मात्र के लिए समान है। बिना सहृदयता के मनुष्य पशु से भी गिरा हुआ है।

यथा ''मनुष्य रूपेण वृकाश्चरन्ति'' हृदयहीन सहानुभूति शून्य मनुष्य तो मानव रूप में भेड़िया है। यदि समाज में यह एकाकी गुण जाग्रत हो जाए तो सारा भ्रष्टाचार, कालुष्य और कष्ट दूर हो जाये। सहृदयता जन्म जात भी होती है और उसका आधान काव्य शास्त्रों की शिक्षा द्वारा भी किया जा सकता है।

मनों में समझौता रहे, अपने साथ दूसरे के हितों का भी ध्यान रहे यह सब शिक्षा के द्वारा ही सम्पाद न हो सकता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इसमें बड़ी सहायक थीं। बचपन से ही विद्यार्थी समूह में रहना सीखते थे। भोजन छादन, रहन-सहन सब सामूहिक होता था, वैयक्तिक नहीं। इसलिए मनों में सामंजस्य रखने का स्वभाव बन जाता था। इस प्रकार आचरणात्मक शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति सर्वथा समाजवादी बन जाता था। समाजवाद उसकी आदत बन जाती थी।

द्वेष रहित यदि सब हो जाएँ और एक-दूसरे से जलें नहीं तो सबका ही कल्याण है। जलने वाला दूसरे को हानि पहुँचाने की धुन में अपनी तो हानि पहले ही कर डालता है। परोन्नति को देखकर दुःखी होना अपने ऊपर व्यर्थ का दुःख लादना है। कर्मफल विश्वासी मनुष्य कभी दूसरे को देखकर नहीं जल सकता। और कर्म फल विश्वास आदि का अभ्यास होता है आर्यदर्शन, उपनिषद् गीतादि के निरन्तर स्वाध्याय से। द्वेषरहित होने के लिए सभी को मन पर जमे हुए कषायों का निवारण करना होगा। यह काम बिना साधना के नहीं हो सकता। वह साधना है धर्माचरण। वैदिक धर्म आचरणात्मक धर्म है केवल विश्वासात्मक नहीं। सब मनुष्य एक-दूसरे को प्यार करें। यह सब तब हो सकता है कि विश्व भर की राजनीति एक हो। राजनैतिक बाजीगरों ने कहीं राष्ट्रीयता के नाम पर, कहीं मत सम्प्रदायों के नाम पर, कहीं संस्कृति के नाम पर, कहीं भाषा के नाम पर मनुष्यों में द्वेष बुद्धि भड़का रखी है वेद कहता है :

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसम् नानाधर्माणं पृथिवीं यथौकसम्।। (अथर्व. 12/1/45)

पृथिवी अनेक भाषाओं वालों और अनेक धर्म वाले जनों को यथास्थान धारण करती है। आदि सृष्टि में अनेक भाषाएँ और धर्म नहीं थे फिर वेद ने ऐसा क्यों कहा?कारण है कि उच्चारण और ध्वनि भेद तो प्रत्येक मनुष्य को एक भाषा में भी भिन्न कर देता है। इसी भेद से मनुष्य बोली से पहचान लिया जाता है। धर्म भी गुण, कर्म, स्वभाव के कारण कामों की योग्यता में भेद के कारण भिन्न हो जाते है।। सब मनुष्य एक ही सा उच्चारण करें, एक सा ही सोचें विचारें यह असम्भव है। अतः वेद भगवान् सहिष्णुता का आदेश देते है। भिन्नत्व में भी एकत्व की दृष्टि रखने की शिक्षा देते है। वैदिक अध्यात्म में दृढ़ श्रद्धा से प्राणिमात्र में प्रेम की बुद्धि बन जाती है। वेद का उपदेश है :-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानतः,
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः। (यजुर्वेद, 40/7)

अर्थ - जब ज्ञानी सब प्राणियों को आत्मवत् जानने लगता है तब कैसा मोह कैसा शोक। वह सब को एक ही तत्व (जड़ और चेतन जानता है) ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान भी बिना स्वाध्याय, सत्संग और साधना के नहीं हो सकता। यह है वेदों की समाज व्यवस्था। वर्णाश्रम विभागों में रहते हुए भी आत्म दृष्टया सब को एक मानकर सबका हित करना। भिन्न वर्तित्व में समदायित्व होना चाहिए। समवर्तित्व से तो अनाचार फैल सकता है। माता, पत्नी, बहिन में बर्ताव सम नहीं हो सकता। कुत्ते और मनुष्य साथ-साथ नहीं खा सकते।

अर्थ व्यवस्था - प्रत्येक व्यक्ति का पुरुषार्थ और बुद्धि

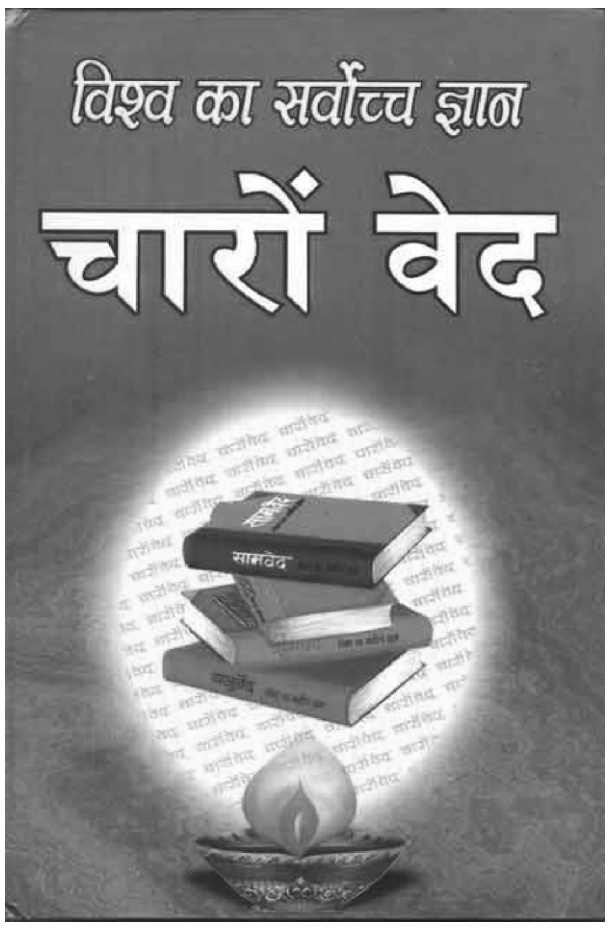

भिन्न-भिन्न शक्ति रखता है। अतः सबकी कमाई में भेद होगा ही। परन्तु ''शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर'' वेद ने आदेश दिया कि सौ हाथों से कमाओं और सहस्त्र में बांटो। दान का उपदेश देकर वेदों ने आर्थिक सामंजस्य स्थापित कर दिया। दान देने से दानी की वृत्ति में उदात्तता आती है और प्रति गृहीता के चित्त में कृतज्ञता उपजती है। दोनों गुण मानवता के विकास के लिए परमोपयोगी हैं। कानून द्वारा किसी का माल छीनकर किसी को देने से माल वाले के हृदय में क्षोभ, क्रोध और वैमनस्य की भावना उदित होगी और लेने वाले में अभिमान, कठोरता और प्रमाद बढ़ेगा। आज कानूनों द्वारा यही राक्षसी भाव प्रकट होते हैं। दानादि धर्मों द्वारा जो कोमल भावनाएँ बनती थीं वे नष्ट हो रही हैं। वेद ने जिस विषय में समत्व की आवश्यकता थी वह भी बता दिया। सब की विद्या, बुद्धि, बल, धन, वैभव समान नहीं हो सकते परन्तु भोजनादि जीवन के साधन सबको मिलें।

''समानी प्रपा सह वो अन्न भाग''

कोई भी भूखा न मरे इस कार्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक घर में बलिवैश्वदेवयज्ञ की नित्यविधि रक्खी।

''समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।'' (अथर्व. 3/30/6)

श्रम का महत्त्व - वेद निठल्ला निकम्मा रहने को बुरा समझता है अतः वेद का आदेश है -

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'' (यजु. 40/2)

सौ वर्ष कार्य करते हुए ही जिओ। प्रत्येक अवस्था में कुछ न कुछ उपयोगी काम करते रहना चाहिए।

''मागृधः कस्य स्विद्धनम्'' किसी का धन मत लो। किसी के परिश्रम की वस्तु मत उड़ाओ। वेद कहता है - **''नस्तेयमद्भि''** चोरी का माल मत खाओ। बिना पुरुषार्थ के दूसरों की कमाई पर ही रहना चोरी का माल खाना है। वेदों के उपर्युक्त उपदेश समाजवाद साम्यवाद सबकी पूर्ति निर्दोष रीति पर करते हैं।

ईश्वर के विषय में - लोग कहते हैं कि सृष्टि की प्रारम्भिक दशा में मनुष्य सूर्य, चन्द्र, बिजली, वायु आदि पदार्थों को देवता मानकर पूजता था। एकेश्वरवाद का ज्ञान तो मनुष्य को बहुत दिनों विचार करते रहने के बाद हो सका। इसीलिए वेद में अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, विद्युत की स्तुतियाँ हैं। परन्तु इन ज्ञानाभिमानी लोगों को यह पता नहीं है कि वेद ने अग्नि आदि सब नाम उपासना प्रकरण में ईश्वर के ही बताए हैं :-

'तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः' (यज. अध्याय 32)

वही अग्नि है, वही आदित्य है, वही वायु है, वही चन्द्रमा है।

''एकंसद् विप्राबहुधावदन्ति'' ऋग्वेद। ईश्वर एक ही है। उस एक ही अस्तित्व को ज्ञानी लोग बहुत नामों से पुकारते हैं।

''ईशावास्यमिदम् सर्वम्'' यजुः। इस सब जगत् में ईश्वर समाया हुआ है। वह सबमें व्यापक है। इससे दूर नहीं है। हमारे उसके बीच में हमारे अज्ञान का पर्दा पड़ा है।

स ''ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासुः यजुः। वह सब प्रजाओं में समाया है।

ईश्वर की उपासना ईश्वर के लिए कोई लाभ पहुँचने या खुशामद के लिए नहीं है। केवल अपने अज्ञान को दूर करने के लिए उसके गुणों का चिन्तन करना उपासना है। उसके गुण हम धारण करके मुक्त बनें यही है उपासना का प्रयोजन। ईश्वर निर्लेप है, निराकांक्षी है वह न पूजा भेंट चाहता है न बलिदान। वैदिक यज्ञों का प्रयोजन है वातावरण को शुद्ध नीरोग, प्राणप्रद बनाना। वेदों में दार्शनिक ज्ञान, गणित ज्ञान, आयुर्वेद, संगीत और पदार्थ ज्ञान की चर्चा भी यत्र-तत्र है। वेदों के अनुसार जीवात्मा अमर है, अल्पज्ञ है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अज्ञानवश बन्धन में पड़ता है। अपने कर्म फल भोगने के लिए ही अनेक शरीर धारण करता है। योग द्वारा जब कर्म से संस्कार वासना दूर हो जाती है तब मोक्ष पा लेता है। इस प्रकार लौकिक और पारलौकिक सभी विषयों में वेद पुरुषार्थ की शिक्षा देता है वेद कहता है -

''स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्वस्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व महिमा तेऽन्येन न संनशे।'' (यजु. 23/15)

हे शक्तिशालिन जीव, अपने शरीर को स्वयं बनाओ अर्थात् अच्छा बुरा शरीर पाना तुम्हारे कर्मों के आधीन है। स्वयं यज्ञ करो अर्थात् कर्म करो और स्वयं उसका फल सेवन करो। तुम्हारी महिमा और से नष्ट नहीं हो सकती। और कोई तुम्हारी महिमा में व्याप्त नहीं होगा। इस प्रकार स्वावलम्बन की शिक्षा देने वाला वैदिक धर्म ही सब मनुष्यों को ग्रहण करने योग्य है। भाग्य पर, देवताओं पर, नबी पैगम्बरों पर भरोसा करना वेद नहीं सिखाता। वेद कहता है अपनी महिमा को, प्रतिष्ठा को तुम स्वयं बना सकते हो। ईश्वर प्रबन्धकर्त्ता है। फलदाता है। परन्तु फलों की प्राप्ति का कर्म तुम्हारे आधीन है। गीता भी कहती है -

न कर्त्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।। (गीता 5/14)

ईश्वर जीवन के कर्त्तापन, कर्म, कर्म फल संयोग को नहीं रचता। स्वभाव प्रकृति ही इसमें प्रवृत्त होता है। (प्रकृति में नियम और नियंत्रण ईश्वर ने स्थापित कर रखा है) जैन धर्म भी यही कहता है। भौतिकवाद भी कर्म पर विश्वास रखता है इस प्रकार वेद ईश्वर को मानता है। ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को मानता है परन्तु पुरुषार्थ की शिक्षा देता है। इससे न भाग्य पर दोष आता है न ईश्वर पर। अपने जीवन के निर्माता यह स्वयं हैं। इसलिए उपनिषद् ने कहा -

''चरैवेति चरैवेति''
चरन् वैमधु विन्दति''

काम करो, काम करो। काम करने वाला ही आनन्द पाता है।

- सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली

ऐतिहासिक नगर हैदराबाद में वेदार्ष गुरुकुल का शुभारम्भ

चैत्र प्रतिपदा सम्वत् 2079 को महर्षि दयानन्द भवन मलकपेट हैदराबाद में श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण कर किया कार्यक्रम का उद्घाटन

अध्यात्मनिष्ठ एवं योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, दयानन्द भवन समिति के अध्यक्ष श्री सुधाकर गुप्ता, तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं युवा विद्वान् संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी ब्रह्मानन्द का रहा पावन सान्निध्य

प्रो. धर्मेन्द्र कुमार, आचार्य रामपाल शास्त्री, आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री, पं. धर्मपाल शास्त्री, आचार्य यज्ञवीर शास्त्री, सेवानिवृत्त प्रिं. रणवीर सिंह शास्त्री, डॉ. दीनदयाल एवं श्री चन्द्रपाल राणा, आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, आचार्य उदयन जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, पं. नरेशदत्त आर्य, आचार्या सुनीति, श्री सोमदेव शास्त्री आदि की गरिमामयी उपस्थिति में 2 व 3 अप्रैल, 2022 को वेदार्ष गुरुकुल का उद्घाटन समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

कार्यक्रम का सम्पूर्ण संयोजन गुरुकुल पौंधा देहरादून के आचार्य धनंजय ने किया

ऐतिहासिक नगर हैदराबाद में सन् 1968 में आर्य महासम्मेलन का विशाल आयोजन महात्मा आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में हुआ था। उस सम्मेलन में कुछ धनराशि बच गई थी जिसका सदुपयोग करते हुए हैदराबाद के मलकपेट क्षेत्र में उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की गई। इस महाविद्यालय का शिलान्यास स्वयं महात्मा आनन्द स्वामी जी ने किया था। महाविद्यालय में दीर्घकाल तक तेलगू भाषा के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य गोपदेव शास्त्री जी ने उपदेशक महाविद्यालय का संचालन किया और यहाँ से तेलगू भाषा में वैदिक साहित्य का अनुवाद करके उसे प्रकाशित भी कराया और वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, किन्तु आचार्य गोपदेश शास्त्री जी के निधन के पश्चात् उपदेशक महाविद्यालय बन्द हो गया। संयोग की बात कि इस उपदेशक विद्यालय को प्रसिद्ध दानवीर श्री सुधाकर गुप्ता की अध्यक्षता में गठित दयानन्द भवन समिति ने सुरक्षित रखा और गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी की प्रेरणा से पुनः वेद पाठशाला (गुरुकुल) प्रारम्भ करने का निश्चय किया। श्री सुधाकर गुप्ता जी और प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने इस कार्य के लिए कई गुरुकुलों के संचालक, वेदार्ष गुरुकुल महाविद्यालय, गौतमनगर, नई दिल्ली के आचार्य एवं श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से विचार–विमर्श करने के पश्चात् दयानन्द

भवन समिति की कार्यकारिणी की बैठक बुलाकर निर्णय किया कि उपदेशक महाविद्यालय के भवन में वेद पाठशाला (गुरुकुल) प्रारम्भ करने के लिए समिति जहाँ भवन वेदार्ष गुरुकुल महाविद्यालय न्यास को सौंपने के लिए तैयार है वहीं तन–मन–धन से सहयोग भी देने का वचन देती है। इस निश्चय के पश्चात् गुरुकुल पौंधा के आचार्य एवं श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल परिषद् के महामंत्री डॉ. धनंजय ने हैदराबाद जाकर सारी स्थिति का आंकलन किया और गुरुकुल प्रारम्भ करने से सम्बन्धी सभी आवश्यक कार्य दयानन्द भवन समिति एवं प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के साथ मिलकर सम्पन्न किये और स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की आज्ञा से निश्चय किया कि नये गुरुकुल का शुभारम्भ नये वर्ष से किया जायेगा। उसी के अनुरूप गत् 2 व 3 अप्रैल, 2022 को गुरुकुल शुभारम्भ समारोह एवं नववर्ष (उगादी पर्व) का भव्य आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से वैदिक विद्वान् एवं सहयोगीजन सम्मिलित हुए। आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, हरियाणा, दिल्ली, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं उड़ीसा आदि प्रान्तों से अनेक संन्यासी, विद्वान्, विदुषी आचार्याएँ, उपदेशक एवं भजनोपदेशक पधारे।

कार्यक्रम से एक मास पूर्व चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया गया जिसकी पूर्णाहुति 3 अप्रैल, 2022 को थी। इस यज्ञ के ब्रह्म पद को प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पं. धर्मपाल शास्त्री, काशीपुर ने सुशोभित किया।

2 अप्रैल, 2022 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त समारोह का विधिवत उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण के द्वारा किया। तत्पश्चात् गुरुकुल शुभारम्भ समारोह विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ। जिसमें सर्वप्रथम गुरुकुल में जिन ब्रह्मचारियों को प्रथम शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल धीरणवास में राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

किया कि वे अपने विषय की क्लास लेते समय प्रारम्भ में 5–7 मिनट के लिए बच्चों को नैतिक शिक्षा का उपदेश दिया करें। इसी से बच्चे संस्कारित होंगे।

हरियाणा शिक्षा विभाग में अतिरिक्त निदेशक डॉ. किरणमयी ने कहा कि शिक्षक समाज को जिस तरह का बनाना चाहते हैं वह बना सकते है। गुरु–शिष्य परम्परा समाप्तप्राय हो चुकी है अतः इसे पुनः लौटाने की जरूरत है। जब तक शिक्षक अपने शिष्य को हृदय तथा मन से नहीं जोड़ेगा और शिष्य अपने गुरु को हृदय तथा मन से नहीं जोड़ेगा तब तक शिक्षा में प्रगति नहीं होगी। प्राचीनकाल में जब कोई बच्चा गुरुकुल या विद्यालय में दाखिला लेता था तो गुरु उस बच्चे को यह कहकर अपनाता था कि मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तम अनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचम एकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्। यही वाक्य शिष्य भी बोलता था और यहीं से गुरु–शिष्य का सम्बन्ध पिता–पुत्र या माता–पुत्री के समान हो जाता था। बच्चों की शिक्षा आवासीय होनी चाहिए और उन्हें पवित्र एवं सात्विक वातावरण मिलना चाहिए ताकि जिससे वे समाज के दूषित वातावरण से बच सकें।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या जी ने शिक्षक गौरव से सम्मानित होने वाले उपस्थित शिक्षक बहन–भाईयों को अपनी शुभकामनाएं तथा बधाई देते हुए कहा कि हमें अपने शिक्षक होने के दायित्व को और अधिक निष्ठा के साथ निभाने की जरूरत है। वर्तमान युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित की जा रही है। दूरदर्शन और प्रचार के अन्य माध्यमों से युवाओं को दिशाविहीन किया जा रहा है। ऐसे में हम सबका दायित्व बनता है कि युवाओं को प्रारम्भ से ही अच्छे संस्कार, देशभक्ति, ईश्वरभक्ति, सेवा तथा परोपकार के संस्कार देने चाहिए और ये शिक्षक ही सबसे अधिक प्रभावी तरीके से दे सकते हैं। बहन जी ने कहा कि हमें अपने परिवारों में केवल लड़कियों को ही नहीं, बल्कि लड़कों को भी और अधिक संस्कारित करने की जरूरत है। ताकि उनके जीवन में पतन की बजाय उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो।

इस पूरे शिक्षक गौरव सम्मान के सूत्रधार गुरुकुल धीरणवास के प्रधान आर्य समाज के सोशल मीडिया के अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आदित्यवेश जी ने सभी विशिष्ट अतिथियों तथा सम्मानित हुए शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का हार्दिक

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित समस्त गणमान्य महानुभावों, गुरुकुल धीरणवास के कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यों का विशेष आभार व्यक्त करते हुए इस कार्यक्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पूरे देश में शिक्षक सम्मान के यह कार्यक्रम भविष्य में और अधिक प्रभावशाली ढंग से किये जायेंगे। शिक्षक वर्ग सदैव उपेक्षित रखा गया है और उन्हें जितना सम्मान मिलना चाहिए उतना सम्मान नहीं दिया गया, इसके महत्त्व को समझते हुए हमने आर्य समाज एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से सर्वप्रथम स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में जलियावाला बाग के 98 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में देश के प्रतिष्ठित शिक्षकों को सम्मानित किया था और हमें शिक्षक बन्धुओं की प्रतिक्रिया जानकर आश्चर्य हुआ कि शिक्षकों को किसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के द्वारा पहली बार सम्मानित किया गया है। उनकी इस पीड़ा को समझते हुए हमने यह निश्चय किया कि हम प्रतिवर्ष योग्य शिक्षकों को सम्मानित करने का कार्यक्रम निरन्तर चलाते रहेंगे। कोरोना के दौरान पूरे दो साल से विभिन्न प्रकार के प्रतिबन्धों के कारण यह कार्यक्रम नहीं हो

पाया, किन्तु इस बार फिर गुरुकुल धीरणवास के इस प्रांगण में हमने अपने सभी विशिष्ट साथियों, सहयोगियों तथा सहयोगी संस्थाओं से विचार–विमर्श करने के बाद यह कार्यक्रम आयोजित किया है। आज भारत के संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती है, हम डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भी इस अवसर पर स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं को भी इस अवसर पर सम्मानित करवाया और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम बड़े उत्साह के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में मुख्यरूप से बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, देश के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित योग्य शिक्षक श्री मनोज लाकड़ा, प्रिं. आजाद सिंह बांगड़, पूर्व चेयरमैन श्री सत्यवीर वर्मा, जिला प्रौढ़ शिक्षा गुरुग्राम डॉ. शशि बाला, जिला रोजगार अधिकारी चरखी दादरी शशि आर्या, स्वामी ब्रह्मानन्द जी (हाथरस), डॉ. लक्ष्मणदास (प्रधान, मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा), रोहतक रेडियो स्टेशन में निदेशक रहे श्री सम्पूर्ण बागड़ी, श्री रामफल सांगवान, डॉ. सुनीता खासा, श्री रौनक भाकर, श्री कृष्ण सैनी, श्री बलजीत सिंह आर्य (डोभी), बहन कल्याणी आर्या, बहन मुकेश आर्या आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस पूरे आयोजन में सर्वश्री सज्जन सिंह राठी, अशोक आर्य, प्रदीप कुमार, ऋषिराज शास्त्री, अजीत पाल, पवन स्वामी, श्रीमती अलका मदान, जयवीर सोनी, आदि के अतिरिक्त गुरुकुल के मंत्री श्री दलबीर आर्य, उपप्रधान श्री सूबे सिंह आर्य, श्री जगदीश आर्य, श्री शोभाचन्द आर्य, श्री मनीराम गोयल, वानप्रस्थ शमशेर सिंह नम्बरदार, श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री सत्य प्रकाश आर्य, श्री बलवीर सिंह देशवाल, श्री नन्दराम सांगवान, श्री महावीर सिंह सेवानिवृत्त तहसीलदार, श्री कृष्ण कुमार यादव, श्री सुरेन्द्र सिंह, श्री खजान सिंह पनिहार, श्री तेलूराम आर्य, श्री बलवन्त आर्य (न्याड़ा), श्री कर्मवीर आर्य, श्री सुनील शास्त्री आचार्य, मताना डिग्गी, फतेहाबाद, गुरुकुल धीरणवास के आचार्य श्री जोगेन्द्र सिंह, श्री नत्थू सिंह आर्य, श्री संदीप कुमार, श्री अनिल आर्य, श्री सोनू आर्य, श्री विक्रम सिंह, श्री नितिन आर्य, श्री दीपक कुमार आदि का विशेष सहयोग रहा।

वैदिक आदर्शों द्वारा ही समाज का संरक्षण

- डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी

वर्तमान समय में समाज में परिवर्तन अत्यन्त तीव्रता के साथ परिलक्षित हो रहा है। कम्प्यूटर और इण्टरनेट की दुनियाँ में मनुष्य एक मशीन बनता जा रहा है। समाज पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अन्धानुकरण कर रहा है। धन और विलासिता की चकाचौंध में आकर्षित होकर भागा जा रहा है। वह अपने अस्तित्व को भी खो रहा है। येन-केन प्रकारेण धनोपार्जन और विलासितापूर्ण जीवन यापन जीवन का अंग बनता जा रहा है। समाज से भी वह अलग होता जा रहा है। स्वयं में केन्द्रित होने के कारण उसके अन्दर मानवीय संवेदनाएँ भी समाप्त हो रही हैं। समाज का कुछ वर्ग नशा मदिरा का शिकार होता जा रहा है। अतः परिवार और समाज का स्वरूप बदल रहा है। इन परिस्थितियों ने अनेक विकृतियों को जन्म दिया है। जिससे समाज के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। परिवार और समाज में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। व्यक्ति में मानसिक शान्ति का अभाव है। पाश्चात्य देश मानसिक शान्ति के लिए भारत की ओर दृष्टि लगाए हुए हैं। अध्यात्म की ओर उनकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे भौतिकता को त्यागकर मानसिक शान्ति के लिए अग्रसर होने के इच्छुक हैं।

भारत विश्वगुरु कहा जाता है। भारत से ही ज्ञान विज्ञान का प्रसार हुआ। भारतीय संस्कृति को 'सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा' कहा जाता है। सृष्टि के प्रारम्भ में मानव कल्याण के लिए वेदों को ऋषियों के माध्यम से ईश्वर ने प्रदान किया था। एक समुन्नत समाज की स्थापना हेतु आवश्यक उपदेश दिए थे तथा मनुष्य के लिए आवश्यक कर्त्तव्यों का विधान किया था। ऋषियों ने इसी आधार पर भारतीय समाज की स्थापना की थी। एक विशाल भवन की नींव के समान ईश्वर प्रदत्त ज्ञान से समाज रूपी भवन की नींव रखी गई थी। यही कारण है कि अनेक आक्रमणों और प्रहारों को सहने के बाद भी भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर आधारित समाज विश्व में अपना एक अस्तित्व बनाए हुए है। यदि यह नींव कमजोर होती तो समाज कब का विखर चुका होता, साथ ही राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का सूत्र भी टूट जाता।

वेदों में समुन्नत समाज की परिकल्पना कर समाज को समुन्नत बनाने, प्रगतिशील बनाने और उत्कर्ष की ओर ले जाने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। समाज को संगठित बनाने के लिए ऋग्वेद का संज्ञान सूक्त संगठन की भावना को जागृत करता है।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते।। ऋग्वेद 10.191.2

समाज में आज व्याप्त ऊँच-नीच की भावना को समाप्त करने के लिए वेदों में निर्देश है कि समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होना चाहिए। भ्रातृभाव से संगठित समाज ही उन्नति करता है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।। ऋग्वेद 5.60.5

समाज को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है कि समाज का कोई वर्ग उपेक्षित न रहे तथा कोई भूखा प्यासा न रहे। सभी निर्भय होकर रहें।

इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो, मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन्।
एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे, मा क्षुधन्मा तृषत्।। अथर्व. 2.29.4

वैदिक ऋषियों ने जहाँ मनुष्य के कल्याण की कामना की थी वहीं समाज के आवश्यक अंग पशुओं की भी निरोगता की कामना की थी।

द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम्। ऋग्. 10.97.20

शिक्षित समाज की आवश्यकता अनुभव करते हुए निर्देश दिया था कि समाज में शिक्षा का प्रसार हो, शिक्षित-अशिक्षितों को शिक्षा और ज्ञान प्रदान करें।

केतुं कृण्वन्नकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
सुमुषद्भिरजायथाः। ऋग्.1.6.3

एक ओर माता-पिता के द्वारा पुत्रों का संरक्षण करने तथा दूसरी ओर माता-पिता की सेवा पुत्रों द्वारा किए जाने का निर्देश है। आज समाज में यह बहुत बड़ी समस्या का रूप ले रहा है। माता-पिता को कहा गया है कि वे सन्तान को योग्यतम बनाएँ।

सुरेतसा पितरा भूम चक्रतुरुरू प्रजाया अमृतं वरीमभिः। ऋग्. 1.159.2

प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शसास। ऋग्. 2.29.5

पुत्र के लिए उपदेश है कि वह पिता के अनुकूल कर्म करने वाला हो और माता के साथ समान मन वाला हो।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः। अ. 3.30.2

एक अन्य स्थान पर माता-पिता के कल्याण की कामना की गई है।

स्वस्ति मात्र उते पित्रे नो अस्तु। अ. 1.31.4

यदि हम चाहते हैं कि हमारा राष्ट्र सुदृढ़ हो। समाज संगठित हो, परिवार में सौमनस्य हो तो आवश्यक है कि हमें उन प्राचीन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हुए प्रगति और उन्नति की ओर अग्रसर होना होगा। अपनी प्राचीन संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाए बिना अपनी संस्कृति की भी रक्षा सम्भव नहीं है।

पृष्ठ 4 का शेष

ऐतिहासिक नगर हैदराबाद में वेदार्ष गुरुकुल का शुभारम्भ

प्रवेश दिया गया उन्हें स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में मंच पर आशीर्वाद हेतु बैठाया गया। आशीर्वाद के उपरान्त सभी उपस्थित संन्यासियों एवं विद्वानों के साथ स्वामी प्रणवानन्द जी ने सभी ब्रह्मचारियों को गुरुकुल भवन में प्रविष्ट करके उन्हें अपना आशीर्वाद दिया। यह दृश्य अत्यन्त भावुकतापूर्ण था। उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि एवं गगनभेदी नारों से ब्रह्मचारियों का स्वागत किया।

गुरुकुल शुभारम्भ समारोह में वीतराग संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज, गुरुकुल बडलूर के आचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं विद्वान् संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के अतिरिक्त डॉ. धर्मेन्द्र कुमार (पूर्व सचिव संस्कृत अकादमी दिल्ली एवं प्रोफेसर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), पं. धर्मपाल शास्त्री, डॉ. दीनदयाल वेदालंकार (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार), आचार्य यज्ञवीर शास्त्री गुरुकुल पौंधा, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक (गुरुकुल होशंगाबाद), आचार्य नरेन्द्र (वेद गुरुकुलम् हैदराबाद), आचार्य उदयन मीमांसक (गुरुकुल निगमनीडम् हैदराबाद), आचार्या सुनीति, आचार्य रामपाल शास्त्री (मानव सेवा प्रतिष्ठान), आचार्य वेदाकर (हैदराबाद), आचार्य चन्द्रभूषण (देहरादून), आचार्या शारदा (कन्या गुरुकुल उड़ीसा), डॉ. धारणा याज्ञिकी (कन्या गुरुकुल प्रहलादपुर, सोरों, उ. प्र.) आदि ने सम्बोधित किया। पं. नरेशदत्त आर्य एवं श्री अशोक आर्य (ग्वालियर) ने भजनों के माध्यम से अपने विचार रखे। इस पूरे कार्यक्रम का कुशल संयोजन गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय एवं आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के उपप्रधान पं. हरि किशन वेदालंकार ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

दो दिवसीय गुरुकुल शुभारम्भ समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा तेलंगाना+आन्ध्र प्रदेश के मंत्री श्री रघु रामलू एडवोकेट, उपप्रधान श्री लक्ष्मण सिंह आर्य, श्री अशोक जायसवाल, दयानन्द भवन समिति के मंत्री श्री श्रीनिवास राव, वेद विद्यालय के व्यवस्थापक ब्र. यश वेदमित्र, ब्र. जितेन्द्र पुरुषार्थी, महाशय सुल्तान सिंह आर्य (रोहतक), श्री अनन्त कुमार शास्त्री (उड़ीसा), श्री बलजीत सिंह सहरावत (दिल्ली), श्री सोमदेव शास्त्री (गुरुकुल गौतमनगर), श्रीमती वसुधा शास्त्री एवं श्री अरविन्द कुमार शास्त्री, आचार्य रतनदेव शास्त्री (सोनीपत) आदि का विशेष सहयोग रहा। गुरुकुल पौंधा तथा गुरुकुल गौतमनगर से पधारे हुए ब्रह्मचारियों ने यज्ञ एवं भोजन आदि की व्यवस्था में श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ अपना योगदान दिया।

इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी, सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी एवं श्री एम. सुधाकर गुप्ता की अपील पर उपस्थित आर्यजनों ने उत्साह के साथ दान देकर गुरुकुल के शुभारम्भ समारोह को और अधिक सम्बल प्रदान किया। श्री एम. सुधाकर गुप्ता ने अपने दयानन्द भवन समिति के समस्त पदाधिकारियों एवं सहयोगियों की ओर से इस अवसर पर घोषणा की कि वे गुरुकुल के संचालन में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आने देंगे और यहाँ पर पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों, पढ़ाने वाले आचार्यों एवं आगन्तुक अतिथियों तथा अभिभावकों के भोजन, आवास एवं अन्य सुविधाओं की पूरी व्यवस्था करेंगे। उपस्थित जन समूह ने उनके इस आश्वासन पर तालियाँ बजाकर जोरदार स्वागत किया। यह दो दिवसीय कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ और 3 अप्रैल, 2022 को सायं 4 बजे शांति पाठ के बाद कार्यक्रम का समापन किया गया।

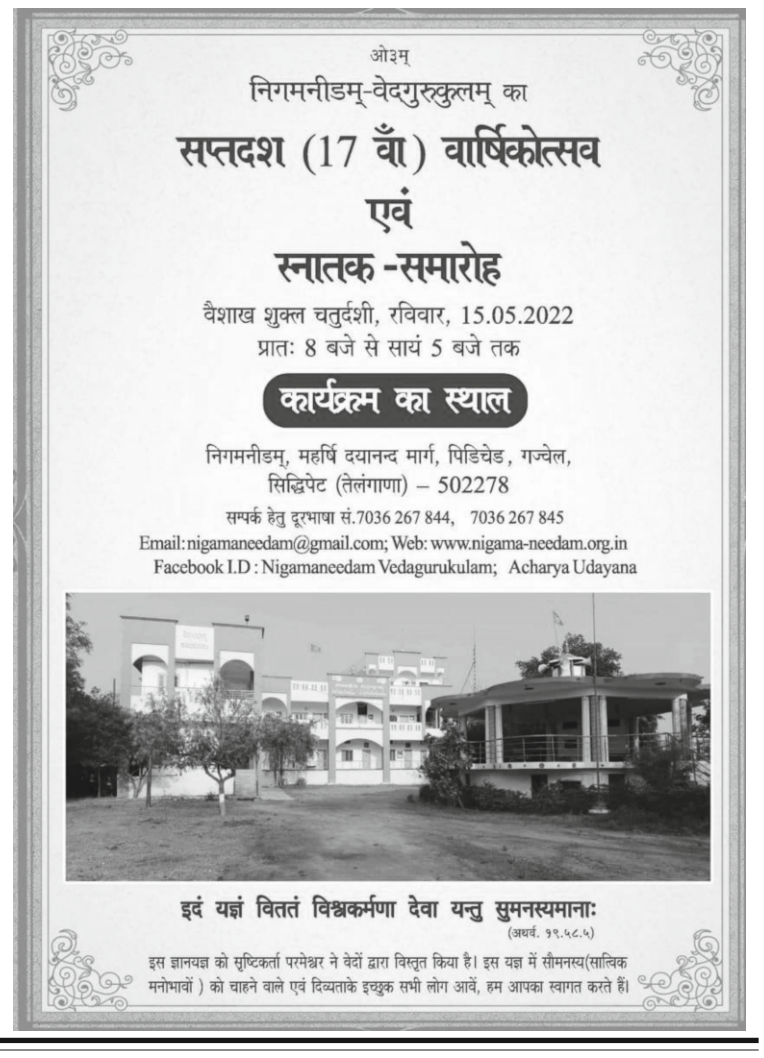

The foundation of human culture through Gurukul system of education

The Aarsh Paddhiti through out our country India and abroad the unified system of education is to be introduced. If all the gurukulas and Vedic Peeths fallow the same system in learning, there must be an unification in the light of our culture and civilization. Our faith in one god (the unseen power), matter and soul for the attainment of human goal.

This our attempt to be peace of mind, we have to lead the way of our life. The engine of modern education is abruptly derailed because of no harmonious sets of wheels or railings. There must be a set of educational system of improving the spiritual knowledge along with the physical ground. The Gurukul Type of education has great importance for the youth boy or girl. They have to undergo their critical age. We have to control their sexual urge. We should give them the teachings about the changes day-to-day happening in their lives. Body, mind and soul are affected by their thinking and actions. We have to safeguard the inherent powers. As you think, so shall you act is a granted fact. The gurukuli student's heart is demanded by the Acharya to move accordingly at the golden event of the student's admission the first dialogue of chanting the mantra- "Yajjo pavitam pramum pavitram.

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

This, the student is bound and controlled to face all the prablems by having a psychological solution. This is the starting of becoming conscious steering his life's boat of sprituality, sincerity and serenity which are the parts of personality. The moral education is must to furnish the qualities of man's life. Bramhacharyen topsadeva mirtupaghnate that is to win lifelong chareer when the Brohamcharya is cherished and maintained. This is really a constructive side of student's life, befitting for today and to morrow. Purity of thoughts and clear vision are the essentials of human life, the so-called vedic philosophy.

Today, we are confronting the disobedience, treachery, rape etc. in the society. We think that we are not safe from ill-doings of the present generation. Even the boys of tender age are indulged in different criminalty. If we have to amend the generation, we have to amend ourselves and for this much we have to welcome the vedic vision in our educational centres. The groaning world is looking towards our vedic culture to soothe and comfort the brain. We are responsible to propogate the sanskaars from the sanskaar vidhi, written by mahrishi Dayanand. Only then, generation would be on the right path. This is the foundation of human culture.

- B. R. Sharma Vibhakar
Mo. :-9350451497, 7838765309

धियो यो नः प्रचोदयात्

– डॉ. धर्मानन्द शर्मा, वैदिक शोध संस्थानम्, पंजाब विश्वविद्यालयः होशयारपुरम् (पंजाब)

पुरावृत्तानुसन्धानपरम्परायां विशिष्यते खलु देवशास्त्रम्। सुकीर्घकालाधिगम्यतेऽविच्छिन्नाऽक्षुण्णा चास्य चिन्तन परम्परा। चाक्षुषपदार्थेषु चैतन्याभिमानं दैवत्वारोपणं चास्य वैशिष्ट्यम्। यः केऽपि पदार्थः प्रभवयति मानवजीवनं हिताहितप्रतिविधानेन स स्तूयते गीयते चवैदिक ऋषिभिः। तेन हि पृथिव्याकाशनदीनदपर्वतादयः सर्वे सर्गपदार्थाः देवत्वमादधाना उपासनायोग्यत्वमगच्छन्। मानवीकरणं चेतनीकरणं चैतदार्याणां वैदिकदेवतावादस्य विशिष्टं लक्षणं मन्यते मनीषी **मैकडानलः।**

महीयते खलु वैदिकवांगमये सवितुः स्थानम्। सवितादेव एव द्विजैरनुष्ठीयमानेषूपनयनसंस्कारेषु गुरुमन्त्रत्वेनानुश्रूयते। प्रथितोऽद्यापि गायत्रीमन्त्रः सर्वकार्येषु सवितारं स्तूयमानः। भौतिकपिण्डोऽयं कालान्तरे धातृनेतृशब्दवद् व्यावहारिकशक्तिरूपेणाभ्युपगच्छन्नवलोक्यते। परम्परा प्रसादात् प्रमादादज्ञानाद्वयं सूर्यस्य पर्यायत्वेन विशेषणत्वेन च प्रयुञ्जानो दृश्यते। भ्रान्तिविलसितमिदं सवितासूर्यसमीकरणं नूनं सर्वथा न मर्षणीयम्। न सविता नाम कश्चिद् धर्मो गुणो वा कश्चित्पदार्थविशेषस्य। पदार्थान्तरवत्सविताऽपि स्वतन्त्र एवास्ति प्राकृतिकः पिण्डः।

वस्तुतः कोऽसौ पुनः सविता?नायं प्रश्नः सर्वथाऽचर्चितपूर्वः। न तथापि चराचरत्वेन याथातथ्येनाधिगतावितथस्वरूपः। प्रायेण भाष्यकाराः सवितारं सूर्यस्य विशेषणत्वेन पर्यायत्वेन चाभ्युपगम्यमाना दृश्यन्ते। परंच सविता विषयकान् मन्त्रानालोच्यं सुव्यक्तं भवति, यन्नायं कथमपि सूर्यः। न ह्यास्य कथमपि सर्वथा संवादः सूर्येण। नूनुमस्ति द्वयोः किच्चिदनतिक्रमणीयं साम्यम्। तदेव साम्यं समीक्ष्य प्राचीनैर्भाष्यकारैस्तेषामेव पन्थानमनुसरिद्भिराधुनिकैच्चापि समीक्षकैः सविता सूर्ययोरभेदः साधितः। प्रकाशकत्वं गतिशीलत्वं चोभयोः समानो गुणः। द्वयोरेव च प्रेरणा पणेन जगदिदं प्राणि व्यूहश्चात्रत्यो विविधेषु व्यापारान्तरेषु व्यापृतो भवति। यश्चास्ति द्वयोः प्रकृतिगतं वैषम्यं न तदनल्पम्। सदैव वैषम्यं विभाव्य केचन विद्वानसो द्वित्रा एव किमपि तर्कयन्ति सर्वथऽतर्कितपूर्वम्। अनुपेक्षणीय वचनानां तेषामप्रतिहतवचांसि नूनं ध्यातव्यानि सानुग्रहधिया धीधनिभिरनुसन्धित्सुभिः। पूर्वापरमन्त्राकलनसाकल्येन परीक्ष्य तत्रत्यं तत्त्वं तन्मत एव बद्धपक्षपातोऽहं तत्पक्षक्षोदाय मोदाय चाभिनवानुसन्धित्षूणां किमपि प्रमाणत्वेन विनिवेदयामि।

1. निखिलेऽपि वैदिकवाङ्मये सूर्यस्य दिवाप्रकाशकत्वेन सवितुश्च रात्रिप्रकाशकत्वेन स्तुतयो दृश्यन्ते। (ऋग्वेदे – 1-35-1, 1-35-10, 2-28-4 इत्यादिमन्त्रेषु) तेन च सूर्यो द्युपतिः, सविता च निशापतिः। सवितुश्च कुत्रचिन्नक्तं दिवं प्रकाशोऽपि श्रूयते न पुनः सूर्यस्य क्वचिद् रात्रिप्रकाशत्वम् अवलोक्यते। अस्तं गतेऽति सूर्ये न सिवताऽस्तमेति स तु सूर्यप्रकाशाभावे मार्गं दिशति प्राणिनः (ऋग्वेदे 2-83-3, 1-35-2, 27-76-1, 5-82-8 इत्यादिषु)।

2. विशिष्यते हि सविता 'अमति' इति विशेषणविशेषेण। विशेषणेनानेन सवितुः प्रकाशस्य विश्रान्तिविरहत्वमुपपद्यते न पुनः सूर्यस्य प्रकाशे तत् तथा। न सूर्यप्रकाशो विश्रान्तिरहितः। गुणेनानेन भिद्यते सर्वथा सविता सूर्यात्। अन्तरिक्षवैज्ञानिका अपि समर्थयन्ति सूर्यप्रकाशस्य विश्रान्तिधर्मत्वम्। अपरत्र च सविता स्तूयते 'अमति' शक्तिमादधानः। शक्तिरेषा विभिन्नकालं सवितुः प्रकाशस्योदयास्तित्वं द्योतयति। क्षणमुदयं क्षणं चास्तं प्रतिदिशन् सविता नूनमद्भुतो विभर्ति गुणः।

3. सूर्यरश्मीनां 'ध्रुवासः' इति विशेषणं सवितुश्च **'गभीरवेपा'** इति। **'ध्रुवासः'** इति विशेषणं तु सूर्यरश्मीणां निष्कम्पकत्वमाख्यापयति। 'गभीरवेपा' च सवितुः रश्मीनां स्पदनत्वं कम्पनत्वं वा प्रथयति। एकस्मिन् निष्पदनत्वमपरस्मिन् च सर्वथा निश्चलत्वमिति सुतरां भिद्यते द्वयोर्गुणधर्मः।

4. श्रूयन्ते हि सूर्यस्य सप्ताश्वाः (ऋग् 5-45-9 इत्यादिषु) ये खलु नयन्ति तद्रथमवितरतम्। सवितुश्च द्वावेवाश्वौ प्रायेण सर्वत्र श्रूयेते। (ऋग् 1-35-5) तौ च श्वेतचरणैः सवितुः द्विरावृत्तं रथं नयतः। सुतरां भिद्यते द्वयोः रथस्य स्वरूपं संख्यां चाश्र्वानां गतिरध्वानं च।

5. **'अष्टो व्याख्यात्ककुभः'** (ऋग्. 1-35-8) इति मन्त्रेण ज्ञायते यत् सविता भूभागतोऽत्यन्तं समीपं राजते। त्रियोजनमतिक्रम्य तस्य रश्मयो भुवि पतन्ति। सूर्यस्य शतयोजनदूरादापतन्ति रश्मयः।

तदेवं सन्ति शतशः प्रमाणानि। यानि द्वयोः सुतरां साधयन्ति भेदम्। कोऽयं पुनरसौ प्राकृतः पिण्डो यो हि पुण्यश्लोकैरस्माकं पूर्वपुरुषैः ऋषिभिः साक्षात्कृतः। साक्षात्कृतधर्माणो हि ते कं पदार्थं साक्षात्कृत्य स्तुवन्ति स्म। अस्तु, भो! नहं किमप्यभिनवमुन्मिषामि। राँथामहोदयेन त्वस्य तुलना ग्रीकस्य **'हर्मेसात्'** कृता यो हि योजयति अहोरात्रसम्बन्धः। न चात्रानुपेक्षणीयवचनः **सुव्वैया** महाभागोऽपि यस्तु योजयति सम्बन्धोऽस्य 'अरोरा' उपग्रहविशेषात्। स एव कारणं उत्तरी ध्रुवस्य षट्मासदीर्घनिशाव्यापाराणाम्। वचनस्त्वत्रावधेयं मनीषिणो बालगंगाधरतिलकस्यापि। तन्मते उत्तरीध्रुवप्रान्तादेवार्याः भारतं सम्प्राताः। तत्रैव साक्षात्कृतोऽयं सवितादेव किं **'अरोरा'** एव?यस्य धनुषाकारः। प्रकाशविम्बो घोटकद्वयमिव प्रतिभाति दर्शकाणाम्। अन्यो वा कश्चिदविचारितपूर्वो नूनं विचारार्हो विचारविद्भिः। अन्ते च तत्सवितुः प्रकाशाय **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** इति कामयमानोऽहं सविता स्वरूपानुसन्धानाय सवितरमेव नौमि स्तौमि च।

– भारतोदयः से साभार

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम् – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन– पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

श्री शत्रोहन शर्मा जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कर्मचारी श्री शत्रोहन शर्मा जी का दिनांक 16 अप्रैल 2022 को सायंकाल लगभग 6:00 बजे निधन हो गया है। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे तथा उनका इलाज बलरामपुर, लखनऊ के अस्पताल में इलाज चल रहा था, परन्तु उन्हें बचाया नहीं जा सका। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय में लगभग 28 वर्ष तक अपनी सेवाएँ प्रदान की। श्री शर्मा जी बहुत ही कर्मठ व्यक्ति थे, उन्होंने अपना पूरा जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित किया। श्री शत्रोहन शर्मा जी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के कार्यालय में सेवा का कार्य करते थे। वे कार्यालय के कार्यों के अतिरिक्त आगन्तुक अतिथियों की सेवा का विशेष ख्याल रखते थे तथा अपने कर्त्तव्य को पूरी जिम्मेदारी से निभाते थे। ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता के निधन से निश्चित रूप से आर्य समाज तथा उनके परिवार को गहरा आघात लगा है। परन्तु परमपिता परमात्मा के निर्णय को न चाहते हुए भी स्वीकार करना ही पड़ता है। श्री शत्रोहन शर्मा जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिकजनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति दें।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरि.) में नये छात्रों का उनयन व वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

संस्कार युक्त शिक्षा समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है

– स्वामी आर्यवेश

बच्चे का निर्माण और उसकी शिक्षा वेदारम्भ संस्कार से शुरू होती है

– स्वामी आदित्यवेश

उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार बच्चे को शिक्षा से जोड़ते हैं – आचार्य देवदत्त

दिनांक 14 अप्रैल, 2022 को गुरुकुल धीरणवास, हिसार (हरियाणा) में नए छात्रों का उपनयन व वेदारंभ संस्कार किया गया। ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देने आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी पहुंचें।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि संस्कारयुक्त शिक्षा समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। बिना संस्कारों के शिक्षित व्यक्ति भी समाज का भला नहीं कर सकता। बिना संस्कारों की शिक्षा का व्यक्ति के जीवन में कोई महत्व नहीं है। उन्होंने कहा कि समाज में शिक्षा का स्तर तो बढ़ रहा है, परन्तु नैतिकता का स्तर गिरता जा रहा है। इसके लिए जरूरी है कि प्रारम्भ से ही छात्रों को संस्कारवान बनाया जाए और उनको इस प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाए जिससे वे आगे चलकर समाज एवं देश उन्नति में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकें। यह सब गुरुकुलीय पद्धति में ही संभव है। गुरुकुल में बच्चा स्वावलंबन का पाठ पढ़ता है जो आगे चलकर जीवनपर्यंत काम आता है।

उपनयन तथा वेदारंभ संस्कार की प्रक्रिया को वैदिक विद्वान आचार्य देवदत्त शास्त्री जी ने बड़ी कुशलता के साथ करवाया। उन्होंने संस्कार विधि में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्दिष्ट सभी विधियों को समझाते हुए नये ब्रह्मचारियों को उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार के महत्त्व को भी सरल भाषा में बताया। आचार्य देवदत्त जी ने बड़ी विद्वता के साथ लगभग दो घण्टे तक ये संस्कार विधि पूर्वक करवाकर ब्रह्मचारियों को मेखला, दण्ड तथा कमंडल देकर भिक्षा के लिए उपस्थित जनसमूह के बीच भेजा। इस अवसर पर उपस्थित स्त्री–पुरुषों ने ब्रह्मचारियों को राशि देकर उत्साहित किया। ब्रह्मचारियों ने वह राशि अपने आचार्य को सौंप दी। इस प्रकार बड़ा ही प्रभावशाली कार्यक्रम रहा।

गुरुकुल के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने इस अवसर पर वेदारम्भ संस्कार का महत्त्व बताते हुए कहा कि इस संस्कार के बाद बच्चे की शिक्षा प्रारम्भ होती है और जब तक वह गुरुकुल में रहेगा उसे नैतिकता तथा अन्य मानवीय मूल्यों से संस्कारित करते हुए संस्कृत सहित समस्त विषयों की शिक्षा दी जायेगी। स्वामी आदित्यवेश जी ने लोगों का आह्वान किया कि यदि आप अपने बच्चों को संस्कारित तथा शिक्षित करना चाहते हैं तो आप हमारे गुरुकुल में अपने बच्चों का प्रवेश दिलायें। इससे सस्ती और उपयोगी शिक्षा और कहीं उपलब्ध नहीं हो सकेगी। गुरुकुल धीरणवास के प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने उपस्थित अभिभावकों को गुरुकुल परिसर में छात्रों के लिए प्रदान की जाने वाली सुविधाओं से अवगत करवाया और सत्र की योजनाओं की जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि इस सत्र से छात्रों के लिए गुरुकुल में स्मार्ट क्लास रूम की व्यवस्था कर दी गई है। संस्कृत और अंग्रेजी स्पीकिंग कोर्स पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। यहाँ शिक्षा के साथ–साथ संस्कारों पर बल दिया जाएगा। वेदारम्भ संस्कार के बाद पूर्व निर्धारित शिक्षक गौरव सम्मान का कार्यक्रम सभागार में प्रारम्भ हुआ। वेदारम्भ संस्कार में गुरुकुल के सभी अध्यापक एवं कार्यकारिणी के पदाधिकारी, सदस्य तथा ब्रह्मचारियों के अभिभावक भी उपस्थित रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।